

# **NEERAJ®**

# हिंदी भाषा : विविध प्रयोग

**B.H.D.L.A.-135** 

**B.A.** General - 1st Semester

**Chapter Wise Reference Book Including Many Solved Sample Papers** 

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Sanjay Jain, M.A. (Hindi), B.Ed.



(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: -

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Published by:



(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail: info@neerajbooks.com Website: www.neerajbooks.com

# © Copyright Reserved with the Publishers only.

#### Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

#### Disclaimer/T&C

- 1. For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.
- 2. This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.
- 3. These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.
- 4. In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book
- 5. The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.
- 6. Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.
- 7. The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.
- 8. All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.
- 9. All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.

# Get books by Post & Pay Cash on Delivery:

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

# <u>Content</u>

# हिंदी भाषा : विविध प्रयोग

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June-2023 (	Solved)	1-3
Question Paper—December-2	022 (Solved)	1-4
Question Paper–Exam Held in	March-2022 (Solved)	1-5
Question Paper–Exam Held in	February-2021 (Solved)	1-3
Sample Question Paper–1 (Sc	lived)	1-2
S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
1. हिंदी की लिपि और वर	र्ननी का परिचय	1
2. हिंदी की ध्वनियाँ		13
3. हिंदी का प्रयोजनमूलक	स्वरूप	22
4. विज्ञान के विषय का बे	धन	33
5. संस्कृति विषय का बोध	न और शब्दकोश का उपयोग	46
6. समाज विज्ञान विषय क	त बोधन और निबंध रचना का परिचय	57
7. भाषण शैली		64
8. सामाजिक विज्ञानों की	भाषा (इतिहास के संदर्भ में) तथा वर्तनी के कुछ नियम	75
9. सामाजिक विज्ञानों की	भाषा (राजनीति विज्ञान) तथा शब्द रचना	86
10. मानविकी की भाषा (ल	ालित कला) तथा विशेषण	96

S.No. Chapterwise Refer	ence Book	Page
11. विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी की भाषा तथा पारिभागि	नक शब्द	111
12. विधि एवं प्रशासन की भाषा तथा पारिभाषिक शब्द उ	गैर अर्थ	124
13. वाणिज्य की भाषा तथा पारिभाषिक शब्द		144

# Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:



www.neerajbooks.com

# **QUESTION PAPER**

June - 2023

(Solved)

हिंदी भाषा : विविध प्रयोग

B.H.D.L.A.-135

समय : 3 घण्टे ।

। अधिकतम अंक : 100

नोट: (i) खण्ड 1 में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(ii) खण्ड 2 में दिए गए निर्देशों के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

# खण्ड - I

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. देवनागरी लिपि के संबंध में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

**उत्तर-संदर्भ-**देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'देवनागरी लिपि', पृष्ठ-11, प्रश्न 5

प्रश्न 2. हिंदी के प्रयोजनमूलक रूप की किन्हीं दो प्रयक्तियों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-3, पृष्ठ-23, 'हिंदी की प्रयुक्तियां और प्रयोजनमूलक हिंदी' तथा पृष्ठ-24, प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप'

प्रश्न 3. सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी के बढ़ते प्रयोग पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-11, पृष्ठ-113, 'सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी भाषा'

प्रश्न 4. विशेषण का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए किन्हीं पोच विशेषज्ञों की संज्ञा में परिवर्तित कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-10, पृष्ठ-96, 'विशेषण', पृष्ठ-97, विशेषण को संज्ञा में परिवर्तित करना'

दयालु – दया

चमकीला - चमक

लोकप्रिय - लोकप्रिया

हरा - हरियाली

निडर - निडरता

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-

# (क) बैंकों में प्रयुक्त हिंदी

**उत्तर-संदर्भ-**देखें अध्याय-13, पृष्ठ-145, 'बैंकों में प्रयुक्त हिंदी'

#### (ख) अव्यय

उत्तर – ऐसे शब्द जिसमें लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के कारण कोई विकार उत्पन्न नहीं होता, वे शब्द अव्यय कहलाते हैं। अव्यय सदैव अपरिवर्तित, अविकारी रहते हैं। जैसे—जब, तब, अभी, उधर, वहाँ, इधर, कब, क्यों, वाह, आह, ठीक, अरे, और, तथा, एवं, किन्तु, परन्तु, बल्कि, इसलिए, अत:, अतएव, चूँकि, अवश्य इत्यादि।

अव्यय के भेद-अव्यय शब्दों के मुख्य तक पाँच भेद होते हैं-

क्रिया विशेषण अव्यय, संबंधबोधक अव्यय, समुच्चयबोधक अव्यय, विस्मयादिबोधक अव्यय, निपात अव्यय

# क्रियाविशेषण अव्यय किसे कहते हैं?

जो अव्यय शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं, जैसे—जल्दी, अचानक, कल आदि।

जैसे-अचानक आ गया।

परसों घर जाओगे।

शीघ्र जाओ।

इन वाक्यों में अचानक, परसों व शीघ्र क्रिया विशेषण अव्यय

क्रिया विशेषण अव्यय के भेद – क्रिया विशेषण अव्यय के भेद निम्नलिखित हैं –

कालवाचक क्रिया विशेषण अव्यय, स्थानवाचक क्रिया विशेषण अव्यय, परिमाणवाचक क्रिया विशेषण अव्यय, रीतिवाचक क्रिया विशेषण अव्यय, कालवाचक क्रिया विशेषण अव्यय

जिन शब्दों से क्रिया होने के समय का पता चलता है, उन्हें कालवाचक क्रिया विशेषण अव्यय कहते हैं।

जैसे-शाम, सुबह, दोपहर आदि।

रमेश परसों चला जायेगा।

अजय कल जयपुर जायेगा।

स्थानवाचक क्रिया विशेषण अव्यय-जिन अव्यय शब्दों से क्रिया के होने के स्थान का पता चलता है, उन्हें स्थानवाचक क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं।

जैसे-यहां, वहां, जहां, तहां, कहां आदि।

तुम्हारा घर कहाँ है।

तुम छुट्टी में घूमने कहाँ जाओगे।

परिमाणवाचक क्रिया विशेषण अव्यय-जिन शब्दों से क्रिया के नापतोल माप अथवा परिमाण का पता चलता है, उन्हें

2 / NEERAJ : हिंदी भाषा : विविध प्रयोग (JUNE-2023)

परिमाणवाचक क्रिया विशेषण अव्यय कहते हैं। जैसे-बहुत, थोड़ा, जरा सा. कम आदि।

तुम थोड़ा काम बोला करो। मुझे कम टॉफी मिली है।

रीतिवाचक क्रिया विशेषण अव्यय-जिन शब्दों से क्रिया के होने की रीति या विधि का पता चलता हो, उन्हें रीतिवाचक क्रिया विशेषण अव्यय कहते हैं।

कर तेज चलती है। तुम तेज दौड़ती हो। साइकिल धीरे-धीरे चलती है।

संबंधबोधक अव्यय (Avyay) किसे कहते हैं?—जो शब्द वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उसका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्द से दिखाये, उसे संबंधबोधक अव्यय कहते हैं। यदि वाक्य में संज्ञा न हो तो वही अव्यय क्रियाविशलेषण कहलायेगा, जैसे—के साथ, पास, आगे, समान, सामने, बाहर, कारण, तुल्य, सदृश आदि।

समुच्चयबोधक अव्यय किसे कहते हैं?—जो अव्यय दो या दो से अधिक शब्दों वाक्यांशों अथवा वाक्यों को आपस में जोड़ते हैं या अलग करते हैं उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं।

जैसे-माता और पिता सो रहे हैं।

आम या केला खाओ।

इन वाक्यों में 'और' व 'या' समुच्चयबोधक अव्यय हैं। समुच्चयबोधक अव्यय के भेद-संयोजक-और, तथा, एवं, जो, अथवा, या, यथा, पुन:, आदि संयोजक कहलाते हैं।

विभाजक-किंतु, परंतु, लेकिन, बल्कि, ताकि, क्योंकि, वरना, आदि विभाजक कहलाते हैं।।

विस्मयादिबोधक अव्यय किसे कहते हैं?—जिन शब्दों से 'हर्ष', 'शोक', 'घृणा', 'आश्चर्य', 'भय' आदि का भाव प्रकट होता है उन्हें विस्मयदिबोधक कहते हैं। जैसे-छि:! अरे! वाह! हाय! अहा! धिक् आदि।

# विस्मयादिबोधक अव्यय के भेद-

विस्मयादिबोधक अव्यय के भेद निम्नलिखित हैं-

हर्षबोधक, शोकबोधक, आश्चर्यबोधक, तिरस्कारबोधक, अनुमानोबोधक, संबोधनबोधक, स्वीकारबोधक

निपात अव्यय किसे कहते हैं?—जो अव्यय शब्द किसी शब्द के बाद लगकर उसके अर्थ या अभाव में विशेष बल देते हैं, उन्हें निपात अव्यय कहते हैं। शब्दों के बाद में पढ़ने से ही उन्हें निपात कहते हैं।

जैसे-ही, भी, तक।

**निपात अव्यय के भेद** – निपात अव्यय के भेद निम्नलिखित है –

सकारात्मक निपात, नकारात्मक निपात, निषेधात्मक निपात, प्रश्नबोधक निपात, विस्मयादिबोधक निपात, बलदायक निपात, तलनात्मक निपात, अवधारणबोधक निपात, आदरबोधक निपात।

### (ग) अनुतान

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-2, पृष्ठ-15, 'तहजा या अनुतन'

# (घ) हिंदी प्रयोग और द्विभाषीकरण

**उत्तर-संदर्भ-**देखें अध्याय-13, पृष्ठ-146, 'हिंदी प्रयोग और द्विभाषीकरण'

#### खण्ड-II

नोट : इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्न 6. निम्नलिखित में से किन्हीं पांच पारिभाषिक शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए-

### (क) अधिनियम

उत्तर—अधिनियम केन्द्र में संसद या राज्य में विधानसभा द्वारा पारित किसी विधान को कहते हैं। जब संसद या विधानसभा में किसी विषय को प्रस्तावित करते हैं तो उसे विधेयक या बिल कहते हैं। संसद या विधानसभा की सर्वसम्मित या सर्वाधिक मतों से पारित होने के बाद उस बिल या विधेयक को अधिनियम का दर्जा मिल जाता है।

# (ख) अध्यादेश

उत्तर-राष्ट्रपित द्वारा सरकार के कहने पर भारतीय संविधान के अनुच्छेद 123 के अंतर्गत अध्यादेश जारी किया जाता जा सकता हैं, जब दोनों सदनों में से कोई भी सत्र में न हो। अध्यादेश जारी करने का अधिकार राष्ट्रपित का विधायी अधिकार है। अध्यादेश किसी भी विधेयक को पारित करने का अस्थायी तरीका है।

# (ग) निविदा

उत्तर – निविदा या टेंडर एक प्रकार का प्रस्ताव है, जो कि टेकेदारों के द्वारा कुछ निश्चित शर्तों एवं निश्चित अविध में किसी कार्य को करने या भण्डार की आपूर्ति करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है। आमतौर पर सभी निर्माण कार्य करने, मरम्मत और संरक्षण या माल की सप्लाई के लिए टेकेदारों की एजेंसी का प्रयोग किया जाता है।

# (घ) प्रारूप

उत्तर –िकसी योजना, प्रस्ताव, विधेयक आदि का वह प्राथमिक रूप जिसमें आगे आवश्यक होने पर संशोधन आदि किया जा सके।

### (ङ) संविदा

उत्तर—संविदा से आशय दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच ऐसे करार या समझौते से हैं जो विधि द्वारा प्रवर्तनीय हो तथा जिसके द्वारा एक या एक से अधिक पक्षकार, दूसरे पक्षकारों के विरुद्ध किसी काम को करने अथवा न करने के लिए कुछ अधिकार अर्जित कर लेता है या कर लेते हैं।

### ( च ) विनियम

उत्तर-किसी कार्यकारी प्राधिकारी या सरकार की नियामक एजेंसी द्वारा जारी किया गया एक नियम या आदेश जिसे कानून का बल प्राप्त है।

प्रश्न 7. निबंध रचना के बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए-

# (क) विज्ञान और मानव जीवन

उत्तर-विज्ञान एक अभिशाप है या वरदान यह कहना और समझना बहुत मुश्किल सा काम है। अगर सही शब्दों में देखा जाए

# Sample Preview of The Chapter

Published by:



www.neerajbooks.com

# हिंदी भाषा : विविध प्रयोग

# हिंदी की लिपि और वर्तनी का परिचय



# परिचय

हम भारतीय हिंदी बोलते और लिखते हैं। भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त कर पाते हैं। इसके माध्यम से हम जिस शब्द को जिस रूप में बोलते या उच्चारण करते हैं, उसे हम लेखन द्वारा भी प्रकट कर सकते हैं। भाषा को हम किसी भी लिपि में लिख सकते हैं।

हिंदी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। देवनागरी एक भारतीय लिपि है, जिसमें अनेक भारतीय भाषाएं तथा कई विदेशी भाषाएं लिखी जाती हैं। यह बायें से दायें लिखी जाती है। इसकी पहचान एक क्षैतिज रेखा से है, जिसे 'शिरोरेखा' कहते हैं। इसमें प्रत्येक शब्द के ऊपर एक रेखा खिंची होती है (कुछ वर्णों के ऊपर रेखा नहीं होती है)। संस्कृत, हिंदी, मराठी, भोजपुरी, नागपुरी, मैथिली, राजस्थानी आदि भाषाएं और बोलियां भी देवनागरी में लिखी जाती हैं। देवनागरी विश्व में सर्वाधिक प्रयुक्त लिपियों में से एक है। लोग एक ही वर्ण को भिन्न-भिन्न प्रकार से लिखते हैं। वर्णों और लेखन की विविधता को समाप्त करने के लिए सरकार ने मानक देवनागरी लिपि संबंधी सुझाव तथा वर्तनी के कुछ नियम बताए हैं, जिनसे टंकण, मुद्रण आदि में एकरूपता आ सके। शब्दों को जब लिखित रूप दिया जाता है, तो उसे वर्तनी कहते हैं। हिंदी की वर्तनी के विविध पहलुओं को लेकर 19वीं शताब्दी के अंतिम चरण से ही विविध प्रयास होते रहे हैं। अधिकतर लोग वर्तनी में मात्राओं के हेर-फेर से गलतियां करते हैं, जैसे–दर्शाया को दरशाया, परिचय को परीचय, प्रत्येक को परतेक, वर्ण को बर्ण आदि। कुछ नियम हैं, जिनके द्वारा वर्तनी के दोषों को कम किया जा सकता है। सही उच्चारण पहचानना और सही उच्चारण करना ही इन गलतियों को कम कर सकता है।

भाषा को सीखने के लिए यह जानना अति आवश्यक है कि उच्चारण और लेखन में हम कैसे तालमेल बना सकते हैं।

# अध्याय का विहंगावलोकन

# भाषा और लिपि

भाषा संकेतों का एक संग्रह है, जिसे अपनी बात या भावना को प्रेषित करने के लिए प्रयोग किया जाता है। भाषा हमारे जीवन का अति महत्त्वपूर्ण अंग होती है। हर व्यक्ति को अपने विचार और भावों को अभिव्यक्त करने के लिए एक माध्यम की आवश्यकता होती है। भाषा के आधार पर ही समाज का बहुमुखी विकास निर्भर करता है।

प्रत्येक भाषा के लिए एक लिपि बनी है। किसी भी भाषा के वर्ण जिस विशेष रूप में लिखे जाते हैं, उसे उस भाषा की 'लिपि' कहते हैं।

# लिपि के फायदे (\$ 0

लिपि का अर्थ होता है—िकसी भी भाषा की लिखावट या लिखने का ढंग। ध्वनियों को लिखने के लिए जिन चिह्नों या संकेतों का प्रयोग किया जाता है, वही लिपि कहलाते हैं।

प्राचीन काल में लिखना बहुत ही कठिन कार्य था। पहले मनुष्य को सिर्फ बोलना आता था, लिखना नहीं आता था। संस्कृति के विकास के साथ-साथ धीरे-धीरे मनुष्य का ज्ञान बढ़ा और उसने ताड़ के पत्तों या भोजपत्र पर लिखना शुरू किया।

मध्य युग में कागज का निर्माण हुआ, जिससे लिखने का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ। लिपि और भाषा दो अलग-अलग चीजें होती हैं। भाषा मूल रूप से बोली जाती है, लिखने को तो उसे किसी भी लिपि में लिख सकते हैं। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि जो भाषाएं लिखी जाती हैं, वही प्रगति करती हैं। उनको बोलने वाला समाज उन्नति करता है। लिपि से ही समाज का विकास होता है। लिपि और समाज के विकास का संबंध निम्नलिखित हैं—

 लिपि का सबसे बड़ा गुण है कि यह विचारों को सुरक्षित करती है और समय के अनुसार आगे भी बढ़ाती है। लिखे

#### 2 / NEERAJ : हिंदी भाषा : विविध प्रयोग

हुए अक्षर ध्विन की तरह मिटते नहीं हैं, बिल्क इससे अक्षरों को स्थायित्व मिल जाता है, जिससे आप अपने विचार को कभी भी बाद में पढ़ सकते हैं। बोलचाल की भाषा और लिखित भाषा के स्वरूप में अन्तर होता है।

- 2. मानव विकास के लिए लिपि आवश्यक है। लिपि के कारण ही हम अपनी संस्कृति को सुरक्षित रख सकते हैं। इसी कारण हमारे पास पुराने जमाने की कृतियाँ, ज्ञान-विज्ञान सुरक्षित है। ये विचार पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ते जाते हैं और मानव समाज विकास करता जाता है।
- 3. लिपि का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इसके द्वारा हम संप्रेषण का विस्तार कर सकते हैं। बोली गई बातों को कुछ हजार लोग ही सुन सकेंगे, लेकिन लिखी हुई बातों को अखबारों, पुस्तकों या अन्य माध्यमों द्वारा लिखकर पहुँचाया जाये, तो लाखों लोग आपके विचार को सुन सकेंगे तथा यह हमेशा बना रहेगा।

# लेखन की विधि

हम जिस क्रम में ध्विनयों का उच्चारण करते हैं, उसे उसी क्रम में लेखन द्वारा प्रेषित करना 'लिपि' है। लिपि में उच्चरित (बोले गये) ध्विनयों के लिए चिह्न निश्चित करते हैं, जिन्हें वर्ण कहते हैं, जैसे—'प' वर्ण एक ध्विन का प्रतीक है और 'ब' किसी दूसरी ध्विन का। 'काल' शब्द में तीन ध्विनयाँ है—क्, आ, ल्। किसी भी भाषा की वर्णमाला में सभी ध्विनयों के चिह्नों की व्यवस्था होती है। हिंदी भाषा की वर्णमाला लिपि देवनागरी लिपि कहलाती है।

सभी भाषाओं की अलग-अलग लिपि होती है। देवनागरी बायें से दायें लिखी जाती है, अरबी भाषा की लिपि दायें से बायें लिखी जाती है। जापानी भाषा के वर्ण ऊपर से नीचे के क्रम में लिखे जाते है। इन विभिन्नताओं के बावजूद हर लिपि, रेखाओं और आकारों के द्वारा उच्चरित भाषा का संकेत करती है।

'देवनागरी' लिपि की तुलना 'रोमन' लिपि से की जा सकती है। देवनागरी में प्राय: शब्दों के आदि और अंत को छोड़कर व्यंजनों के साथ स्वर के स्थान पर केवल मात्राओं का प्रयोग होता है, जबिक रोमन लिपि में हमेशा शब्दों में व्यंजन स्वरों का प्रयोग अनिवार्य है।

# देवनागरी लिपि

#### वर्णों का मानक रूप

हिंदी का क्षेत्र बहुत बड़ा होने के कारण इसके वर्णों के लेखन में विविधता है, जिससे मुद्रण यानी छपाई और प्रचार-प्रसार में कठिनाई होती है। वर्तमान युग में कम्प्यूटर के माध्यम से शब्दों का संयोजन किया जाता है। दोनों ही स्थितियों में मानक वर्णों का प्रयोग अनिवार्य है।

भाषा में एकरूपता लाने के लिए भारत सरकार ने केंद्रीय हिंदी निदेशालय को मानक देवनागरी लिपि निर्धारित करने का कार्य सौंपा था। निदेशालय ने 1966 व 2006 में मानक देवनागरी लिपि प्रस्तुत की।

स्वर: अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ मात्राएँ: ा (आ), ि (इ), ी (ई), ु (उ), ू (ऊ),

 $^{\perp}(\mathbf{v}), ^{\perp}(\dot{\mathbf{v}}), \dot{\mathbf{v}}, \dot$ 

अनुस्वार : ं (अं)

विसर्ग : (:) (अ:)

व्यंजन	क	ख	ग	घ	ङ
	च	छ	ज	झ	ञ
	ट	ठ	ड	ढ	ण
	त	थ	द	ध	न
	Ч	फ	ब	भ	म
	य	₹	ल	व	
	श	ष	स	ह	
<u> </u>					

द्विगुण व्यंजन : ड़ ढ़

संयुक्त व्यंजन: क्ष त्र ज्ञ %

# लेखन की कठिनाइयाँ

लेखन में कुछ शब्दों के कारण उसे पढ़ने-लिखने में कठिनाई आती है; जैसे-पद्मा, उद्यान, उद्धार। 'द्म' दो वर्णों का योग है-द् + म। इन शब्दों को हलंत () चिह्न का प्रयोग करके सरलीकृत करके लिखा जा सकता है, जैसे-पद्मा, उद्यान, उद्धार। 'द्म' (या दम) संयुक्त वर्ण कहलाते हैं।

संयुक्त वर्ण बनाने की विधि—मानक वर्णों से संयुक्त व्यंजन बनाने के संदर्भ में तीन बाते हैं—

- र, ऋ से बनने वाले संयुक्त व्यंजनों के निम्नलिखित रूप होंगे, जैसे-क्रम, श्रम, तर्क, ड्रामा, बर्र, रुपया, रूप, हृदय, शृंगार, दृष्टि इत्यादि।
- 2. आप निम्नलिखित वर्णों को देखिए और उसमें समान तत्व पहचानिए।

क्ष स श व ल य

- अब वर्ण क और फ से संयुक्त वर्ण बनाने के लिए इनकी आखिरी रेखा थोड़ी काट दें, तो संयुक्त वर्ण बन जाएंगे; जैसे–क, फ – मुक्त, हफ्ता।
- 4. अब कुछ वर्ण और बचे हैं-

छ ट ठ ड ढ द ह

4. अब कुछ वर्ण और बचे हैं

इनसे निम्नलिखित प्रकार से वर्ण बना सकते हैं— इकट्ठा, धनाढ्य आदि।

#### तर्वजी

वर्तनी में सरल प्रक्रिया से एक ही शब्द को चार रूपों में लिख सकते हैं; जैसे–

संबंध सम्बन्ध संबन्ध सम्बंध

लेकिन इससे एकरूपता नहीं आती है और सीखने वालों को कठिनाई होती है।

# हिंदी की लिपि और वर्तनी का परिचय / 3

हिंदी निदेशालय के अनुसार 'न' वर्ण बाकी चार वर्णों से पहले अनुस्वार में दर्शाया जाए।

जैसे-न को त, थ, द, ध से पहले लिखा जाए-

**मानक रूप**-संबंध, अंत, पंथ, अंधा

पूर्व रूप-सम्बन्ध, अन्त, पन्थ, अन्धा

इसी तरह नासिक्य व्यंजनों के साथ कुछ और उदाहरण-

हिंदी टंकण चंचल मंत्री गंगा

झंडा संभव पंछी संघ प्रबंधक

इस पद्धित से भाषा में एकरूपता और सरलता आएगी, लेकिन नासिक्य व्यंजनों के बाद उस वर्ग के पहले चार वर्णों के अलावा और कोई वर्ण आएगा, तो नासिक्य व्यंजन का आधा रूप लिखा जाएगा, अनुस्वार नहीं; जैसे—

सही शब्द		गलत शब्द
पुण्य	ण् + य	पुंय
गन्ना	न् + न	गंना
निम्न	म् + न	निंन

# वर्तनी के कुछ नियम

उच्चरित शब्द के लेखन में प्रयोग होने वाले लिपि चिह्नों के व्यवस्थित रूप को वर्तनी कहते हैं। वर्तनी के नियम निम्नलिखित हैं—

- जिन व्यंजनों के अंत में खड़ी पाई आती है, उन्हें जब दूसरे व्यंजन के साथ जोड़ते हैं, तो इसे हटा दिया जाता है; जैसे—'तथ्य' में 'थ' का खड़ी पाई रहित रूप प्रयोग होता है।
- जब किसी शब्द में श, ष, में से सभी अथवा दो का एक साथ प्रयोग हो, तो उनका प्रयोग वर्णमाला क्रम से होता है; जैसे—शासन, शोषनाग, विशेष।
- जब य, र, ल, व और श, ष, स, ह से पहले 'सम्' उपसर्ग लगता है, तो वहाँ 'म्' के स्थान पर अनुस्वार लगता है; जैसे–

सम् + वाद = संवाद

सम् + सार = संसार

अनुस्वार का उच्चारण ङ्, ण्, न्, म् के समान होता है; जैसे—कंघी (कङ्घी), घंटी (घण्टी), संत (सन्त), पंप (पम्प)। अनुस्वार से मिलती–जुलती एक ध्विन अनुनासिक भी है, जिसका रूप (ँ) है। इसे चन्द्रबिंदु कहते हैं। इन दोनों में केवल यह भेद है कि अनुस्वार की ध्विन कठोर होती है और इसका उच्चारण नाक से होता है। अनुनासिक की ध्विन कोमल होती है और इसका उच्चारण मुख तथा नासिका दोनों से होता है; जैसे—हंस और हँस।

हंस (अनुस्वार का प्रयोग) 🕒 एक पक्षी

हँसना (अनुनासिक का प्रयोग) – एक क्रिया व्यापार

# हिंदी लिपि और वर्तनी का मानकीकरण

हिंदी के विविध पहलुओं को लेकर 19वीं शताब्दी के अंतिम चरण से ही विविध प्रयास होते रहे हैं। इसी तारतम्य में केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा वर्ष 2003 में देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी के मानकीकरण के लिए अखिल भारतीय संगोष्ठी का आयोजन किया था। इस संगोष्ठी ने 'मानक हिंदी वर्तनी' के लिए निम्नलिखित नियम निर्धारित किए गए।

वर्तनी संबंधी अद्यतन नियम इस प्रकार है-

# 1. संयुक्त वर्ण-

- (क) खड़ी पाई वाले व्यंजन—संयुक्ताक्षर बनाने के लिए खड़ी पाई हटाई जाती है; जैसे—ख्याति, प्यास, सभ्य, विघ्न, श्लोक आदि।
- (ख) अन्य व्यंजन-
- (अ) 'क' और 'फ' के संयुक्ताक्षर-पक्का, दफ्तर आदि।
- (आ) संयुक्त 'र' के प्रचलित तीनों रूप-प्रकार, धर्म, राष्ट्र।
- (इ) ङ, छ, ट, ठ, ढ, द और ह के संयुक्ताक्षर हल् चिहन लगाकर ही बनाए जाएँ, जैसे: लट्टू, बुड्ढा, विदया, आदि। (लट्टू, बुड्ढा, विद्या नहीं)।
- (ई) 'श्र' का प्रचलित रूप ही मान्य होगा।
- (उ) हल् चिह्न युक्त वर्ण बनाने वाले संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यंजन के साथ 'इ' की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के तत्काल पूर्व ही किया जाएगा, न कि पूरे युग्म से पूर्व, जैसे-कुट्टिम, द्वितीय आदि।
- (क) संस्कृत में संयुक्ताक्षर पुरानी शैली से भी लिखे जा सकेंगे, जैसे-
  - संयुक्त, विद्या, विद्वान, वृद्ध, द्वितीय, बुद्धि आदि।
- विभिन्त-चिह्न-इसमें सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों में प्रतिपादक से अलग लिखा जाएं; जैसे-राम ने, राम को स्त्री ने, स्त्री को आदि।

सर्वनाम के साथ दो विभक्ति चिह्न होने पर पहला मिलाकर और दूसरा पृथक लिखा जाएं; जैसे–उसके लिए, उसमें से।

- 3. क्रियापद—संयुक्त क्रियापद में सभी क्रियाएं अलग-अलग लिखी जाएं; जैसे—जा सकता है, कर सकता है, बढ़ते चले जा रहे हैं आदि।
- 4. हाइफन (योजक चिह्न)—हाइफन का विधान स्पष्टता के लिए किया गया है; जैसे—द्वंद्व समास में— राम-सीता, देख-रेख, पढ़ना-लिखना आदि।
  - (क) सा, जैसा आदि से पूर्व हाईफ़न रखा जाए, जैसे– तुम–सा, राम-जैसा।
  - (ख) तत्पुरुष समास में हाइफन का प्रयोग केवल वहीं किया जाए, जहाँ उसके बिना भ्रम होने की संभावना हो, अन्यथा नहीं, जैसे भू-तत्व। सामान्यत: तत्पुरुष समासों में हाइफन लगाने की आवश्यकता नहीं है, जैसे—रामराज्य, राजकुमार, गंगाजल, ग्रामवासी, आत्महत्या आदि।

#### 4 / NEERAJ : हिंदी भाषा : विविध प्रयोग

- (ग) कठिन संधियों से बचने के लिए भी हाइफन का प्रयोग किया जा सकता है, जैसे-दिव-अक्षर, द्वि-अर्थक आदि।
- 5. अव्यय—'तक', 'साथ' आदि अव्यय सदा पृथक लिखे जाएं; जैसे—उनके साथ, वहाँ तक। हिंदी में कुछ ऐसे अव्यय हैं, जो भावों का बोध कराते हैं। उदाहरणार्थ—ओह, अहा, भर, क्या, किन्तु, मगर, लेकिन इत्यादि।

# 6. श्रुतिमूलक 'य', 'व'

- (क) 'य', 'व' श्रुतिमूलक शब्द का प्रयोग विकल्प से होता है; जैसे-लिए-लिये, हुआ-हुवा आदि में से पहले स्वरात्मक रूपों का प्रयोग किया जाए। इसे सभी रूपों और स्थितियों अर्थात क्रिया, विशेषण, अव्यय आदि में प्रयोग किया जाता है; जैसे-दशाएं, गए, नई किताब, मोहन के लिए, पानी लिए हुए इत्यादि।
- (ख) यदि 'य' श्रुतिमूलक व्याकरणिक न होकर शब्द का ही मूल तत्त्व हो, वहां पर वैकल्पिक श्रुतिमूलक बदलने की आवश्यकता नहीं है; जैसे—जातीय भेदभाव, स्थायी आदि। इसे इस प्रकार लिखना गलत होगा—जातीए, स्थाई।

# 7. अनुस्वार तथा अनुनासिकता-चिह्न (चंद्रबिंदु)

- (क) अनुस्वार व्यंजन है और अनुनासिकता स्वर का नासिक्य विकार है। हिन्दी में दोनों अर्थभेदक भी हैं। अनुस्वार ( ـ ) और अनुनासिकता चिह्न ( ँ ) दोनों ही प्रचलित रहेंगे।
- (ख) संयुक्त व्यंजन के रूप में जहां पंचम वर्ण के बाद शेष चार अक्षरों में से कोई भी अक्षर हो, तो एकरूपता और लेखन की सुविधा के लिए अनुस्वार (ं) का ही प्रयोग होना चाहिए; जैसे-चंचल, कंजूस, कंठ आदि। इसे चन्चल, कन्जूस, कन्ठ लिखना उचित नहीं होगा।

हिंदी में अनुस्वार अर्थात बिंदी का प्रयोग करना ही उचित होगा। यदि पंचम वर्ण के बाद किसी और वर्ग का कोई वर्ण आए या पंचम वर्ण का वही वर्ण दुबारा आए तो पंचम वर्ण अनुस्वार के रूप में कोई बदलाव नहीं होगा।

# 8. विदेशी ध्वनियां

(क) उर्दू से आए अरबी-फारसी मूलक वे शब्द जिनकी विदेशी ध्वनियों का परिवर्तन हिंदी ध्वनियों में हो चुका है, उन्हें हिंदी के रूप में स्वीकार किया जा सकता है, क्योंकि वे शब्द हिंदी के अंग बन चुके हैं; जैसे-कलम, किला आदि।

लेकिन जहां पर उनका शुद्ध विदेशी रूप में प्रयोग अभीष्ट हो वहां पर उनके हिन्दी में प्रचलित रूपों

- नुक्ते के स्थान पर नुक्ते लगाए जाने चाहिए; जैसे–जमीन-जमीन, कफन-कफन, खाना-खाना आदि।
- (ख) अर्धिवकृत्त 'ओ' (ॉ) ध्विन का प्रयोग अंग्रेजी के उन शब्दों में किया जाता है। इनका शुद्ध रूप का हिंदी में प्रयोग अभीष्ट होने पर 'आ' की मात्रा के ऊपर अर्धचंद्र (ॅ) का प्रयोग किया जाता है; जैसे—डॉक्टर, फुटबॉल इत्यादि। अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं से नए शब्द ग्रहण करने तथा उनके देवनागरी लिप्यंतरण का संबंध है, अंग्रेजी शब्दों का देवनागरी लिप्यंतरण इतना क्लिष्ट नहीं हो कि उसके वर्तमान में देवनागरी वर्णों में अनेक नए संकेत-चिह्न लगाने पड़े। अंग्रेजी-देवनागरी लिप्यंतरण मानक अंग्रेजी उच्चारण के अधिक-से-अधिक निकट होना चाहिए।
- (ग) कुछ प्रचलित शब्द हिंदी में ऐसे हैं, जिनकी वर्तनी में दो-दो रूप चल रहे हैं; जैसे-गरमी/गर्मी, बरफ/बर्फ, बिलकुल/ बिल्कुल, सरबत/सर्बत, वापस/वापिस, बीमारी/बिमारी आदि शब्द। ये दोनों रूप ही मान्य हैं।
- 9. हल चिह्न () इस चिह्न () को हल चिह्न कहा जाए, न कि हलंत। व्यंजन के नीचे लगा यह चिह्न उस व्यंजन के स्वर रहित होने की सूचना देता है अर्थात वह विशुद्ध रूप से व्यंजन है।

संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी में सामान्यत: संस्कृत रूप ही रखा जाए, लेकिन हिंदी के जिन शब्दों के प्रयोग में हल चिहन लुप्त हो चुका है, उसे उन शब्दों में फिर से हल चिहन लगाने का यत्न नहीं किया जाए; जैसे–विद्युत, विद्वान आदि के त, न में और इसी प्रकार से भगवान, श्रीमान के स्थान पर यदि भगवन्, श्रीमन् शब्दों का प्रयोग हो तो हल चिहन अवश्य प्रयोग करना चाहिए।

10. स्वन परिवर्तन—संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी को ज्यों-का-त्यों ही ग्रहण किया जाए। अत: 'ब्रह्मा' को 'ब्रम्हा', 'चिह्न' को 'चिन्ह', 'ऋण' को 'रीण' में बदलना उचित नहीं है। इसी प्रकार कुछ अन्य शब्द—

अशुद्ध प्रयोग	•	शुद्ध प्रयोग
ग्रहीत	_	गृहीत
दृष्टव्य	_	द्रष्टव्य
प्रदर्शिनी	_	प्रदर्शनी
अत्याधिक	_	अत्यधिक

11. विसर्ग—तत्सम शब्दों के अंत में प्रयुक्त विसर्ग का प्रयोग अनिवार्य है; जैसे—अत: पुन:, प्राय:, वस्तुत:, क्रमश: आदि।

यदि संस्कृत के वे शब्द जिनमें तत्सम रूप प्रयुक्त हो तो विसर्ग का प्रयोग अवश्य किया जाए; जैसे—'दु:खानुभूति'। लेकिन जब उस शब्द के तद्भव रूप में विसर्ग का लोप